सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरूषार्थ

(प्रथम सप्ताह) स्वमान - मैं सर्व आत्माओं का कल्याण करने वाली आत्मा हूँ

मैं शुद्ध, पवित्र आत्मा इस संसार में सर्व का कल्याण करने के लिए ही अवतरित हुई हूँ..., मुझे तो प्रकृति सहित सारे विश्व का कल्याण करना है।

योगाभ्यास :- मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूं,मास्टर ज्ञानसूर्य हूं...। मेरे मस्तक और नयनों से निरन्तर सकाश निकल कर चारों ओर फैल रही है। विश्व की सर्व आत्माओं के व्यर्थ संकल्प व विकर्म भस्म हो रहे हैं..। सर्वशक्तियों से सम्पन्न मैं आत्मा अपने अव्यक्त आकारी फरिश्ते चोले में विश्व के ग्लोब पर बैठी हूं..., सर्व आत्माओं का कल्याण हो..., सबके दु:ख दूर हो जाएं..., सर्व आत्माएं सम्पूर्ण पावन बन जाएं...., ऐसे अनुभव करें कि मेरी नजर संसार की सभी आत्माओं पर पड़ रही है..., सर्व आत्माएं बाबा की सर्वशक्तियों रूपी किरणों से नहा रही हैं....। प्रकृति के पांचों तत्वों सहित सभी आत्माएं पावन बनती जा रही हैं...।

योग का प्रयोग :- सकाश द्वारा अन्यात्माओं की बुद्धि को बदलने की सेवा करना, जिस आत्मा की सेवा करनी है उसे इर्मज कर विचार देना है कि आप बहुत अच्छी आत्मा हो, आप विश्व कल्याणकारी आत्मा हो, आप मेरे अच्छे दोस्त हो।

ऐसे ही शराब छुड़ाने वाले के लिए विचार दे सकते है कि यह बहुत खराब आदत है, इससे बहुत नुकसान होता है, इसे आप छोड़ दो। क्योंकि जो विचार हम परमात्म याद में करते हैं उस समय उस आत्मा को इमर्ज करके देंगे जो विचार देंगे वह उनके मन को पूरा टच होगा। इसका प्रयोग सात दिन या इक्कीस दिन अवश्य करना है, इसके लिए मन बिल्कुल शुद्ध हो। सम्पूर्ण विश्वास के साथ यह सेवा करनी है।

स्मृति के लिए - जैसा बाप वैसे बच्चे, जिस प्रकार बाबा के मन में सदैव सर्व के प्रति कल्याण की भावना समाई हुई है उसी प्रकार मेरे मन में भी सर्व आत्माओं के प्रति कल्याण की भावना भरी हुई हो। क्योंकि हम सब आत्माएं एक ही परिवार के हैं, एक ही घर से आएं हैं, एक ही पिता के बच्चे हैं तो फिर भेदभाव हो ही नहीं सकता। इसलिए हम किसी के प्रति अकल्याण का संकल्प भी नहीं कर सकते।

धारणा :– निर्विकल्प संकल्पों के साथ नि:स्वार्थ सेवा करनी है। जरा भी स्वार्थ की भावना न हो।

चिन्तन:- हम स्वयं से व दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार कैसे करें? चिन्तन कर अच्छे-अच्छे विचार लिखें।

अपने से पूछो - मैं क्या पुरुषार्थ कर रहा हूँ... और क्या कर सकता हूँ - निश्चय ही मन गवाही देगा कि मैं जो पुरुषार्थ कर रहा हूँ, उससे कई गुणा ज्यादा कर सकता हूँ। तो जो मैं कर सकता हूँ वो तो कर लूं ताकि अंत में मेरा मन यह सोचकर न पछताए कि मैं कर तो सकता था, परन्तु मैने किया नहीं।

(द्वितीय सप्ताह) स्वमान - मैं पूर्वज सो पूज्य आत्मा हूँ।

अमृतवेले योगाभ्यास - मैं कल्पवृक्ष की जड़ों में बैठी सर्वशक्तियों से सम्पन्न आत्मा हूँ.....कल्पवृक्ष के बीज रूप शिव बाबा मेरे साथ कम्बाइण्ड हैं.....मस्तक सिंहासन पर विराजमान मुझ आत्मा से सर्वशक्तियों की रंग-बिरंगी असंख्य किरणें सारे वृक्ष की टाल-टालियों, पत्तों को (विश्व की सर्व आत्माओं व प्रकृति के पांच तत्वों को) जा रही हैं.....सभी आत्माएं पुकार रही हैं....हे मेरे पूर्वज व पूज्य इष्टदेव आओ आकर मेरे दु:ख हरो, मुझे दु:ख-अशांति से मुक्ति दिलाओ.....मुझ आत्मा में बापदादा से आ रही सर्वशक्तियों की किरणें निकलकर सब आत्माओं को सुख, शांति की गहरी अनुभूति करवा रही हैं.....।

कर्म करते योगाभ्यास -मैं शक्तिशाली समर्थ आत्मा कल्पवृक्ष को लेकर चल रही हूँ....मेरे सिर के ऊपर कल्पवृक्ष है...मैं निरंतर योगी हूँ...योगी जीवन वाला हूँ..स्वयं सर्वशक्तिवान परमात्मा मेरे साथ है...उसकी सर्वशक्तियां मेरी प्रापर्टी हैं.....उसने सब गुण व शक्तियां मुझे विल कर दी हैं...चलते-फिरते कर्म करते सर्वशक्तियों की किरणें मुझ आत्मा से निकलकर कल्पवृक्ष को जा रही हैं...मेरे सिर पर विश्व का ग्लोब है...विश्व की दु:खी अशांत आत्माओं को निरंतर शक्तियों की किरणें जा रही हैं.....।

नुमाशाम का योगाभ्यास - मैं परम पवित्र फरिश्ता आकाश में सारे ब्राह्मण परिवार के साथ ट्रान्सपेरेन्ट विमान में बैठा हूँ....मैं फरिश्ता विमान का पायलट हूँ.....स्वयं बापदादा मेरे बाजू में बैठे हैं.....सारा ब्राह्मण परिवार विमान में अपने फरिश्ते स्वरूप में अपनी सर्वोच्च स्थिति में स्थित होकर विश्व को सकाश देने के लिए बैठा है...अब मैं फरिश्ता ट्रांसपेरेन्ट विमान को लेकर सारे विश्व का चक्कर लगा रहा हूँ....मैं फरिश्ता, बापदादा और सारा ब्राह्मण परिवार सारे विश्व को शक्तिशाली सकाश दे रहा है....विश्व की सर्व आत्माओं को संदेश दे रहे हैं कि हे विश्व की सर्व आत्माओं जागो...विश्व के महान तीर्थ भारत के आबू में भगवान आ चुके हैं...परमपिता निराकार ज्योतिबिन्दु शिव परमात्मा अपना सर्वस्व हम बच्चों पर न्यौछावर कर रहे हैं...अब यह संसार परिवर्तन होने ही वाला है....विनाश सामने खड़ा है...जल्दी से जल्दी आकर अपना जन्मसिद्ध अधिकार परमात्मा के सर्व खजाने, ईश्वरीय हक प्राप्त कर लो, अब नहीं करेंगे तो अंत में बहुत पछताना पड़ेगा। इसलिए हे मीठे भाइयों अब अलबेलापन छोड़कर परमात्मा के प्यार का, शक्ति का, वरदान का, अतिन्द्रिय सुख का अनुभव कर लो, कर लो, कर लो....।

अभ्यास जारी रहे -हर आत्मा के ओरिजिनल संस्कारों को ही देखना है।

शिव भगवानुवाच -रोज रात को सोने से पहले बापदादा को पोतामेल सच्ची दिल का दे दिया तो धर्मराजपुरी में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इससे नींद भी अच्छी आएगी।

यह भी स्मृति रहे -यह दुनिया आपकी नहीं है, गेस्ट हाउस है, अब तो घर जाना ही है। अब चलने का नहीं बल्कि उड़ने का समय है।

फरीदाबाद। महापौर अशोक अरोरा को संस्था की ईश्वरीय सेवाओं से परिचित कराने के लिए ओम शान्ति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु.मीनाक्षी।

खण्डवा। शांतिदूत युवा साइकिल यात्रा की प्रभारी ब्र.कु.छाया तथा सदस्यों का स्वागत करते हुए विधायक कमल पटेल।

हाथरस। भारत के सबसे युवा उप कुलपति, नॉयडा इंटरनेशनल युनिवर्सिटी, अरविंद कुमार सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.शांता। साथ हैं ब्र.कु.दुर्गेश व पूर्व विधायक सुरेश प्रताप गांधी।

बरेली। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए भाजपा मीडिया प्रभारी गुलशन आनंद। साथ हैं ब्र.कु.पार्वती, ब्र.कु.नीता।

फतेहगढ़। पुलिस अधीक्षक जोगेन्दर कुमार शांतिदूत युवा साइकिल यात्रा प्रभारी ब्र.कु.सरिता व ब्र.कु.सुमन को मोमेन्टो प्रदान कर सम्मानित करते हुए।

बिलासपुर। संस्कृति एवं संस्कार, विषय पर सम्बोधन करते हुए ब्र.कु.मंजू।

दारागंज-इलाहाबाद। मुख्य विकास अधिकारी अटल कुमार राय, जिला विकास अधिकारी रमेशचन्द्र पाण्डेय, कृषि अधिकारी यतीन्द्र सिंह, बी.डी.ओ. अशोक कुमार, ब्र.कु.कमल, ब्र.कु.ज्योति व ब्र.कु.राजेन्द्र दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।

भिवानी। पांच दिवसीय परमात्म अवतरण अमृत महोत्सव में ब्र.कु.आभा, ब्र.कु.सरोज, ब्र.कु.पुनीत तथा अन्य।